मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

अप्रैल 2012 वर्ष 17, अंक 4

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस

प्रत्येक वर्ष **23 अप्रैल** को विश्व भर में **विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस** मनाया जाता है। यूनेस्को (UNESCO) द्वारा आयोजित इस दिवस का उद्देश्य पठन एवं प्रकाशन को प्रोत्साहित करना एवं बौद्धिक संपदा को कॉपीराइट के द्वारा संरक्षा प्रदान करना है। यूनेस्को ने इस वर्ष के विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस को 'पुस्तक एवं अनुवाद' विषय पर केंद्रित किया है। इस नाते वर्ष भर पूरी दुनिया में अनुवाद से संबंधित गतिविधियों के आयोजन किए जाएंगे। विदित हो कि प्रत्येक वर्ष विश्व की अनेक भाषाओं में बड़े पैमाने पर आपसी अनुवाद कार्य संपन्न होते हैं और इस अनुवाद के माध्यम से हम बौद्धिक साहित्य एवं अन्य विषयों, विधाओं के बारे में जान पाते हैं।

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस सन् 1995 से प्रति वर्ष मनाया जाता है। दरअसल, 23 अप्रैल को विश्व की अनेक महान साहित्यिक हस्तियों के जन्म या पुण्य तिथि पड़ते हैं। इनमें शामिल हैं : मिगुएल दे सरवांतेज, मॉरिस द्रुओं, इन्का गार्सिलासो दे ला वेगा, हाल्दर किलजान लैक्सनेस, मैनुएल मेजिआ वलेजो, व्लादीमीर नाबोकोव, जोसेप प्ला तथा विलियम शेक्सपियर। पूरे विश्व में पठन को प्रोन्नत एवं प्रोत्साहित करने तथा पुस्तकों से जुड़े अनेक सांस्कृतिक आयामों को समेटते कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की वर्ष भर धूम रहेगी। इनमें से अनेक कार्यक्रम देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग या मैत्री पर बल प्रदान करने के उद्देश्य से होंगे।

पूरे विश्व के किसी एक शहर को विश्व पुस्तक राजधानी घोषित करने के उद्देश्य से यूनेस्को प्रति वर्ष अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संगठन, अंतरराष्ट्रीय पुस्तक विक्रेता संघ तथा पुस्तकालय संगठन एवं संस्थाओं के अंतरराष्ट्रीय संघ के प्रतिनिधियों की एक संयुक्त बैठक का आयोजन करता है।

वर्तमान विश्व पुस्तक राजधानी अर्जेंटीना का राजधानी शहर ब्यूनस आयर्स है। आर्मेनिया का शहर येरेवान 23 अप्रैल, 2012 से 22 अप्रैल, 2013 तक विश्व पुस्तक राजधानी रहेगा। भारत के राजधानी शहर दिल्ली को वर्ष 2003 में विश्व पुस्तक राजधानी होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

किताबें हमारी दोस्त होती हैं
वह हमें अंदर से बदलती हैं
नव चेतना का भाव जगाने में
हमारी ज़िंदगी को साहचर्य देती हैं।
भोला पंडित 'प्रणयी' अररिया, बिहार

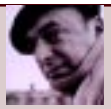

मैं चाहता हूं
मिट्टी
आग
रोटी
शक्कर
गेहूं
समंदर
किताबें
और
ज़मीन
सभी मनुष्यों के
लिए
पाब्लो नेरूदा

जन्मदिन, 14 अप्रैल पर विशेष

डॉ. भीमराव आंबेडकर : समता के सिपाही

भारतीय समाज परंपरा से छुआछूत और सामाजिक विषमता का अभिशाप झेलता आया है। कुछ अन्य सामाजिक कुप्रथाएं भी हमारे समाज में रही हैं जिनके विरुद्ध अनेक समाजचेता पहरुओं ने आवाज उठाई। बाबा भीमराव आंबेडकर भी ऐसे ही एक समाज सुधारक थे जिन्होंने विषमता के विरुद्ध आवाज उठाई। वर्तमान मध्य प्रदेश के मऊ में एक गरीब महार जाति में 14 अप्रैल, 1891 को पैदा हुए भीमराव रामजी आंबेडकर, जिन्हें बाबा साहेब भी कहते हैं, ने छुआछूत का दंश अपने बालपन से ही झेला था। इनके पिता रामजी सकपाल भारतीय फौज में थे

और शिक्षा के प्रति बेहद उत्साही। भीमराव का परिवार महाराष्ट्र के अम्बावाडे कस्बे से संबंध रखता था।

भीमराव अपने माता-पिता की 14वीं संतान थे पर शिक्षा में कोई कमी मां-बाप ने नहीं होने दी। बड़ौदा स्टेट के द्वारा शिक्षित भीमराव की पहली नौकरी बड़ौदा के गायकवाड़ के यहां लगी। वे वहां मिलिटरी सेक्रेटरी बने, पर शीघ्र ही इस्तीफा दे दिया। भीमराव की उच्च शिक्षा मुंबई यूनिवर्सिटी, कोलंबिया यूनिवर्सिटी तथा लंदन के यूनिवर्सिटी में हुई। 1918 में वे बॉम्बे (अब मुंबई) में प्रोफेसर बने।

भीमराव आंबेडकर के बारे में यह तथ्य बहुतों को नहीं मालूम कि वे कॉलेज की शिक्षा पाने वाले पहले विजातीय भारतीय थे। निम्न वर्ण में पैदा होने की वजह से भोगे गए अपमानजनक व्यवहार ने उन्हें अंदर से झकझोरा और उनके मन में हिंदू धर्म के प्रति वितृष्णा का भाव जगा। वे वर्णव्यवस्था, जाति व्यवस्था और भेदभाव-छुआछूत के विरुद्ध उठ खड़े हुए, हिंदू धर्म का त्याग कर बौद्ध धर्म अपनाया। मृत्युपर्यंत वे बौद्ध ही रहे। उन्होंने समता सैनिक दल बनाया। भारतीय बौद्ध महासभा की भी स्थापना की। उन्हें बोधिसत्व या आधुनिक बुद्ध कहा गया। भीमराव 'मूकनायक' जैसी पत्रिकाओं के द्वारा राजनीतिक अधिकारों एवं छुआछूत के विरुद्ध आंदोलन चलाते रहे। उन्होंने कानून की पढ़ाई की थी, सो, देश के संविधान के प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में संविधान निर्माण में बड़ी भूमिका निभाई। स्वाधीनता के बाद देश के पहले कानून मंत्री बने। भीमराव कानूनवेत्ता होने के साथ-साथ दार्शनिक, मानवशास्त्री, अर्थशास्त्री, इतिहासकार और संपादक भी थे। 6 दिसंबर, 1956 को दिल्ली में इनका निधन हुआ। कृतज्ञ राष्ट्र ने मरणोपरांत उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

शिक्षित महिलाओं का प्रतिशत बढ़ा

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का साक्षरता अभियान रंग ला रहा है। खासकर महिला साक्षरता की दिशा में इस अभियान को बड़ी सफलता मिली है। वर्ष 2001 की जनगणना में जहां शिक्षित महिलाओं की संख्या 53.67 फीसद थी वह 2011 की जनगणना में बढ़कर 65.4 फीसद हो गई। सरकार का मानना है कि ऐसा महिलाओं और बच्चों के लिए चलाई जाने वाली अनेक कल्याणकारी योजनाओं के कारण हुआ है।

बालिका शिक्षा के मामले में पांच से 14 साल के आयु समूह में स्कूलों में लड़कियों की संख्या जहां 2004-05 में 79.6 फीसद थी वह 2009-10 में बढ़कर 87.7 फीसद हो गई। इसी तरह, 15 से 19 वर्ष के आयु समूह में पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या 40.3 फीसद से बढ़कर 54.6 फीसद हो गई।

अंधकार से प्रकाश की ओर
बढ़ते कदम–पुस्तकों के संग

दीपक गुप्ता, ने.बु.ट्र.

पृथ्वी दिवस, 22 अप्रैल

हर वर्ष 22 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता के रूप में पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की शुरुआत 1970 में अमेरिकी सांसद जेराल्ड नेल्सन ने की थी। इस दिवस को जल, ज़मीन और हवा के सुरक्षा-संरक्षा की शपथ ली जाती है, पेड़ लगाए जाते हैं। ऊर्जा संरक्षण और प्रदूषण कम करने में हमारी जिम्मेवारी भी इस दिवस का उद्देश्य है।

क्या आप जानते हैं?

- 'पुस्तक' और 'कलम' शब्द मूल रूप से ग्रीक भाषा के शब्द हैं। ग्रीक 'पुक्सियोन' और 'कलमोस' शब्द ही संस्कृत और हिंदी में क्रमशः 'पुस्तक' तथा 'कलम' के रूप में आए हैं।
- विश्व का सबसे पुराना पुस्तक मेला आज से लगभग 500 साल पहले जर्मनी के शहर फ्रैंकफर्ट में लगा था। जर्मनी के ही लीपजिग में 17वीं सदी में एक अन्य पुस्तक मेले की शुरुआत हुई। भारत में विश्व स्तर का पहला पुस्तक मेला 1972 में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा नई दिल्ली में लगाया गया। कोलकाता में पुस्तक मेला की शुरुआत 1976 में हुई।

पुण्य तिथि, 8 अप्रैल पर विशेष

मंगल पांडे : प्रथम क्रांतिवीर की शहादत

देश भले ही सन् 1947 में आजाद हुआ, किंतु आजादी की लड़ाई का बिगुल लगभग एक सदी पूर्व ही 1857 में बज चुका था। यों, क्रांति की शुरुआत का दिन 31 मई को मुकर्रर किया गया था, पर बैरकपुर में 34वीं रेजीमेंट में सिपाही मंगल पांडे ने 29 मार्च को ही क्रांति का बिगुल बजा दिया। गाय और सूअर की चर्बी से चिकनाए हुए कारतूसों का भारतीय सैनिकों से प्रयोग करवाकर अंग्रेजों ने हिंदू और मुस्लिम सैनिकों का धर्म भ्रष्ट करने का जो कुचक्र रचा उसके विरोध में मंगल पांडे ने अपने ही रेजीमेंट के अंग्रेज अफसर ह्यूसन पर गोली चलाकर इस क्रांति की शुरुआत कर दी। मंगल पांडे का साथ अन्य सैनिकों ने भी दिया। इसलिए 1857 के विद्रोह को सिपाही विद्रोह भी कहते हैं। ह्यूसन के बाद बाग व अन्य अंग्रेज अफसर भी मंगल पांडे के प्रचंड गुस्से व विरोध का शिकार बने। अंत में, यूरोपीय सैनिकों ने पांडे व अन्य विद्रोही सैनिकों को पकड़ लिया। पांडे ने आत्मबलिदान का प्रयास किया, किंतु सफल नहीं हुए। अंग्रेजों ने 8 अप्रैल, 1857 को बैरकपुर के रेजीमेंट में ही अन्य सैनिकों के सामने मंगल पांडे एवं सैकड़ों अन्य सैनिकों को फांसी पर चढ़ा दिया। मंगल पांडे की शहादत 1857 की पहली शहादत थी। यह वीर बांकुड़ा बलिया, उत्तर प्रदेश में पैदा होकर सेना में भर्ती हुआ था।

ओमप्रकाश 'मंजुल', बरेली, उ.प्र.

पुण्य तिथि, 26 अप्रैल पर विशेष

श्रीनिवास रामानुजन : असाधारण गणितज्ञ

भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की यह 125वीं जयंती है। गणित के क्षेत्र में उनके अप्रतिम और असाधारण योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने सन् 2011 में उनके जन्मदिन, 22 दिसंबर को प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय गणित दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। साथ ही, वर्ष 2012 को 'राष्ट्रीय गणित वर्ष' घोषित किया। विदित हो कि सन् 1887 में इरोड, मद्रास प्रेजीडेंसी में पैदा लेने वाले रामानुजन का मात्र 32 वर्ष की अवस्था में 26 अप्रैल, 1920 को निधन हो गया था।

गणित में बिना किसी औपचारिक शिक्षा के रामानुजन ने गणितीय विश्लेषण, संख्या सिद्धांत, अपरिमित शृंखला एवं सतत भिन्न में असाधारण योगदान दिया। गणित के दिग्गज जी.एच. हार्डी ने उन्हें समकलीन महान गणितज्ञों की श्रेणी में रखा। मात्र 12 वर्ष की अवस्था में गणित में मास्टरी हासिल करने वाले रामानुजन ने स्कूल में अपने असाधारण गणितीय कौशल के कारण व्यापक सराहना और सम्मान प्राप्त किया। अपनी आजीविका चलाने के लिए उन्होंने क्लर्क की नौकरी की। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में सन् 1912-13 में भेजे उनके थ्योरम के नमूने पर प्रख्यात गणितज्ञ हार्डी ने सकारात्मक अनुक्रिया प्रेषित की और उन्हें कैम्ब्रिज में अपने साथ काम करने हेतु बुलाया। वे रॉयल सोसायटी तथा ट्रिनिटी कॉलेज के फेलो भी बने।

सत्यकथा

ग्रंथों की रक्षा के लिए जान दे दी

ह्वेन सांग से जुड़ा एक किस्सा है। अपने साथ बौद्ध धर्म के हजारों ग्रंथ लिये ह्वेन सांग जब भारत से लौट रहे थे तो एक जगह उन्हें नदी पार करनी पड़ी। बहुत ज्यादा भार के कारण नाव डोलने लगी। नाविक ने ह्वेन सांग को कुछ किताबें नदी में फेंकने को कहा, ताकि भार कम हो। यह सुन ह्वेन सांग उदास हो गए। नाव में चित्रगुप्त और धर्मगुप्त नाम के दो भाई भी सवार थे। दोनों ह्वेन सांग के असमंजस को भांप गए और एक-दूसरे से आंखों-आंखों में इशारा कर नदी में कूद पड़े। इस तरह उन दो भाइयों ने दुर्लभ ज्ञान की रक्षा अपनी जान देकर की।

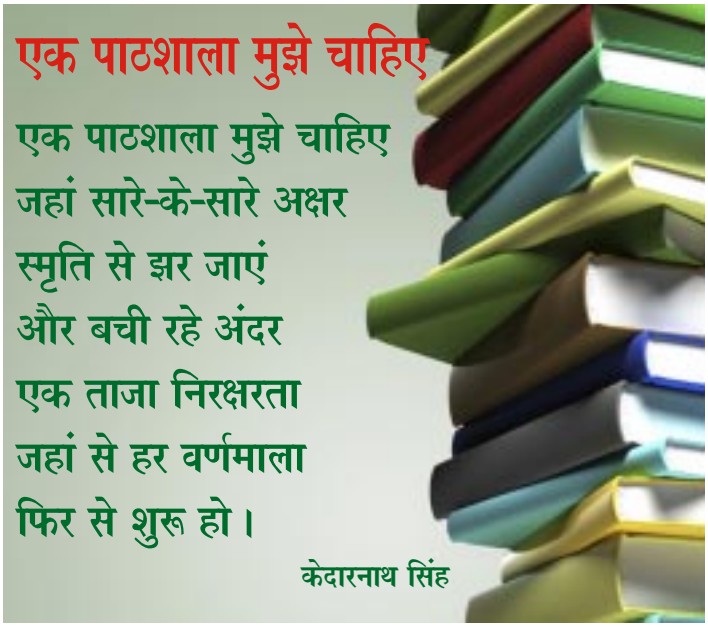

विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल के अवसर पर विशेष काव्य प्रस्तुति

किताबें

प्रो. शरद नारायण खरे

हो किताबों की जयकार
किताबें सबकी तारणहार।

किताबें जगमग जग करतीं
किताबें सबकी पालनहार।

किताबें अंधकार हरतीं
किताबें फैलातीं उजियार।

किताबें अमृत बरसातीं
किताबों में है जीवन-सार।

किताबों में सूरज-चंदा
किताबों में बसता संसार।

किताबों में जीवन का सुख
किताबें एक बड़ा उपहार।

किताबें सद्गुण को लातीं
किताबें दुर्गुण पर प्रहार।

किताबें जीवन की हैं नींव
किताबें खुशियों का आधार।

किताबें सागर-सी गहरीं
किताबें नदिया की जल-धार।

किताबें वफादार साथी
किताबें हैं यारों की यार।

किताबें सुखकर इक मौसम
किताबें हैं वसंत-बहार।

मंडला, म.प्र.

पुस्तक है सूरज

कुंदन सिंह सजल

पुस्तक है सूरज, करे हर घर में उजियार
जिसको पढ़ अज्ञान का, दूर हटे अंधियार।

पुस्तक ऐसा कोष है, सबको देती ज्ञान
और बढ़ाती है 'सजल', घर-समाज में मान।

पुस्तक किरण प्रकाश की, दूर करे भ्रमजाल
जिसको पढ़कर मूर्ख भी, होते मालामाल।

सभी कलाओं का 'सजल', पुस्तक है आगार
पुस्तक खोले ज्ञान की, नई दिशा के द्वार।

समाधान मिलता जहां, शंकाओं को मीत
जीवन को पावन करे, पुस्तक वो संगीत।

मानव को सन्मार्ग दे, पुस्तक ऐसा पंथ
पुस्तक वह आलोक है, करे तिमिर का अंत।

जीवन पथ में जब कभी, भटका है इंसान
पुस्तक ने उसको दिया, सही दिशा का ज्ञान।

पुस्तक सच्ची मित्र है, नहीं पालती द्वेष
सत्य, अहिंसा, प्रेम का, देती है संदेश।

रायपुर (पाटन), सीकर, राजस्थान

मेरी पुस्तक

प्रभात गुप्त

मेरी पुस्तक मुझको भाती
नहीं किसी का कुछ ले जाती
सदा रही देने की रीत!
मेरी पुस्तक में लिखे हैं
मीठे और रसीले गीत
पुस्तक पढ़ो निकलता उससे
मधुर कर्ण प्रिय जो संगीत!
पुस्तक लेना नहीं जानती
देने में ही उसकी जीत!
नहीं किसी से कुछ लेती है
सबसे रखती है यह प्रीत
नहीं अकेला लगे आदमी
पुस्तक ऐसी सुंदर मीत!
देना ही सीखा पुस्तक ने
जाते चाहें बरसों बीत!
मेरी पुस्तक मुझे दिखाती
कितने किस्से दृष्य सजीव
कभी हिमालय की ऊंचाई
कभी समंदर के कुछ जीव!
पुस्तक की दुनिया है आली
पुस्तक से जीवन संगीत!

जयपुर, राजस्थान

किताब

संदीप कपूर, *अंबाला सिटी, हरियाणा*

रस की फुहार है किताब,
ताजी-सी बयार है किताब।
दादी रोज बांचती जिसको
ज्ञान का भंडार है किताब,
मास्टर जी के हाथों में
क्या मस्त औजार है किताब।
सब कुछ मिल जाएगा इसमें
ऐसा अजब बाजार है किताब
रसीली कहानी, मजेदार कविता,
किस्सों भरा संसार है किताब।
कभी डूबकर देखो तो इनमें
दिमाग तेजी की धार है किताब
पतझड़, सावन, बसंत यही
हर मौसम में मस्त बहार है किताब।
जानो तो सच्चा यार है किताब
जीवन का तो सार है किताब।

विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल के अवसर पर विशेष काव्य प्रस्तुति

वरदान किताबें

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

सबको देतीं ज्ञान किताबें
जीवन में वरदान किताबें
नहीं किताबों-सा गुरु ज्ञानी
महिमा इनकी जग ने जानी
भेद-भाव के बिना सभी का
करती हैं उत्थान किताबें।
काम किताबों का है न्यारा
लातीं जीवन में उजियारा
पढ़ने-लिखने वालों की तो
बन जातीं पहचान किताबें।
सबसे इनका निर्मल नाता
इनको कपट न कभी सुहाता
प्रेम करे इनसे जो कोई
उसको सुख की खान किताबें।
वाह! किताबों को क्या कहना
ये तो हैं मानव का गहना
जो पत्थर को पारस कर दे
ऐसी हैं भगवान किताबें।

उन्नाव, उ.प्र.

ज्ञान की देवी बनी किताब

मदन मोहन उपेंद्र

ज्ञान की देवी बनी किताब
दुख-दर्दों को हरे किताब
सबको धनवान बनाए किताब
जीवन को हर्षाए किताब
धर्म का मार्ग दिखाए किताब
मंजिल नई दिखाए किताब
उन्नति पथ दर्शाए किताब
हर जन्म में साथ निभाए किताब
साक्षरता की राह किताब
मिल-जुलकर अपनाएं किताब
पढ़ें किताब, गहें किताब।

मथुरा, उ.प्र.

पुस्तक में परमेश्वर बसता

डॉ. हरिश्चंद्र वर्मा

मुझको जग-भर की चीजों से
अपनी सभी पुस्तकें प्यारी
इनको पढ़कर मन-उपवन की
खिल जाती है क्यारी-क्यारी।
सच मानो, मेरे मानस का
इनमें विमल विकास भरा है
इनसे ज्ञान-ज्योति पाकर ही
मेरा जीवन नित निखरा है
मेरा राम इन्हीं में रमता
मंगल-भवन, अमंगलहारी।
इनसे सुलभ नवल चिंतन ही
उन्नति-पथ पर मुझे बढ़ाता
सदा चढ़ाता है शिखरों पर
बनकर मेरा भाग्य-विधाता
पुस्तक में परमेश्वर बसता
मैं पुस्तक का परम पुजारी।
पुस्तक-प्रेमी मानव रहता
निर्जन में भी नहीं अकेला
उसके मन-आंगन में निशि-दिन
लगता सद्भावों का मेला
मन के पावन हो जाने से
मिटती भव-बाधाएं सारी।

रोहतक, हरियाणा

बनाती विद्वान किताब

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, *गोरखपुर, उ.प्र.*

देती सारी ज्ञान किताब
बनाती है विद्वान किताब
पढ़ना-लिखना हमें सिखाकर
दिखलाती है जहान किताब।
देश-देश की बात बताकर
देती हर दिन ज्ञान किताब
जो पढ़ता है इसे ध्यान से
महान उसे बनाती किताब।
विज्ञान इतिहास भूगोल की
बतलाती हर बात किताब
सामान्य ज्ञान की बात बताकर
बनाती खूब होशियार किताब।
जो पढ़ना-लिखना न जाने
उसे पढ़ना-लिखना सिखाती किताब
डॉक्टर, वैज्ञानिक, टीचर, इंजीनियर
सब कुछ बना देती है किताब।

किताबें मित्र हैं, हमेशा साथ रखिए
किताबें इत्र हैं, हमेशा पास रखिए
जीवित देव प्रतिमा हैं किताबें
किताबें पितृ हैं, हमेशा याद रखिए।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

मूरख को ज्ञानवान बनाती हैं किताबें
जीने का हुनर सबको सिखाती हैं किताबें
पढ़ता जो इन्हें लक्ष्य भी पा लेता है वही
भटके जो, राह उनको दिखाती हैं किताबें।
डॉ. बी. पी. दुबे, सागर, म.प्र.

अच्छी सीख सिखलाती किताब
ज्ञान-पथ पर ले जाती किताब
शब्दों की है बड़ी महिमा
अंधकार को दूर भगाती किताब।
सिद्धेश्वर, पटना, बिहार

ज्ञान जगाती हैं किताबें
मान दिलाती हैं किताबें
भ्रमों को जीवन से निकाल
सही राह दिखाती हैं किताबें।
डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

जीवन का सार पुस्तकें
अनुपम उपहार पुस्तकें
बसता है इनमें सुख 'शरद'
मेरा तो प्यार पुस्तकें।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

पुस्तक देती जीवन ज्ञान
पढ़ो-लिखो होते विद्वान
नीर-क्षीर विवेक है आता
मिटता जीवन से अज्ञान।
गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

ज़िंदगी के अंधियारे में प्रकाश है किताब

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **साक्षरता संवाद : मार्च 2012 :** पत्रिका का नवीनतम अंक। इसमें सूचनाएं अप्रतिम हैं। सरकारी काम अच्छा हो सकता है, यह प्रमाण मिला। नई पुस्तकों की जानकारी मिलती है।
राष्ट्रबंधु, कानपुर, उ.प्र.

☐ **सा. सं. : फरवरी 2012 :** 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के बारे में जानकारी देते आवरण लेख, कविताएं तथा नवीनतम पुस्तकों की जानकारी आदि प्रशंसनीय हैं।
अशोक आनन, मक्सी, शाजापुर, म.प्र.

☐ विश्व पुस्तक मेले का आयोजन हिंदी प्रेमियों के लिए महाकुंभ जैसा आकर्षण है। भारत के कोने-कोने में पाठकों के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट एक प्रेरणा स्रोत है। श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन के द्वारा आप एक बड़ा काम कर रहे हैं। **सा. सं.** से पुस्तक एवं साक्षरता संबंधी अनेक नई जानकारियां मिलती हैं। सरल, सुबोध कविताएं पढ़कर अच्छा लगता है। ट्रस्ट की यह छोटी-सी पत्रिका गागर में सागर है। **दानबहादुर सिंह,** रीवा, म.प्र.

☐ समसामयिक और तथ्यपरक जानकारी पत्रिका के हरेक अंक को संग्रहणीय बना दे रही है। मातृभाषा के संबंध में उपयोगी जानकारी सहित अन्य लेख पढ़कर अतीव प्रसन्नता हुई। दरअसल, मातृभाषा के प्रति गहन प्रेम वास्तव में स्वयं के प्रति स्नेह का ही द्योतक है।
शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड

☐ **सा. सं. : जनवरी 2012 : सा. सं.** का लगभग हर अंक सहज-सरल तो होता ही है, साथ ही ज्ञान से परिपूर्ण भी। विश्व हिंदी दिवस, महादेवी वर्मा, राष्ट्रगान के सौ वर्ष आदि अनेक लघु आलेख ज्ञान व जानकारी से परिपूर्ण थे। कविताएं बोधगम्य व नवसाक्षरों के लिए सरस व रोचक थीं। आपका श्रम सार्थक है।
भगवती प्रसाद गौतम, कोटा, राजस्थान

☐ गजानन पाण्डेय की प्रस्तुति 'मनुष्य' में जो लिखा है वह पढ़कर अपने संघर्ष के परिणाम के प्रति आशान्वित हुआ। कविता पक्ष श्रेष्ठ है। साक्षर भारत परियोजना पर कुछ जानकारी दें।
दामोदर जैन, भोपाल, म.प्र.
(मार्च अंक में साक्षर भारत यात्रा के क्रम में साक्षर भारत परियोजना पर कुछ आधारभूत जानकारी दी गई है। आशा है पढ़कर आप संतुष्ट होंगे। **–संपा.**)

☐ **सा. सं.** देश में चल रहे साक्षरता अभियान में अपने नए-नए साक्षरता सूत्र लेकर अग्रदूत की भूमिका का निर्वहन कर रहा है।
डॉ. बी. पी. दुबे, सागर, म.प्र.

☐ **सा. सं.** देखने, पढ़ने का सौभाग्य 'सु-साहित्य पुस्तकालय' में हुआ। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है। हर अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक व पठनीय है। साक्षरता बढ़ाने में यह अहम भूमिका निभा रहा है।
जगे देश की क्या पहचान / पढ़ा-लिखा मजदूर-किसान
जब तक अनपढ़ इनसान / नहीं रुके यह महत अभियान।
सुनंदा संतोष गुप्ता, अमरावती, महाराष्ट्र

☐ **सा. सं.** अपनी संपूर्णता के साथ प्रकाशित हो रहा है। अंक प्राप्त होता रहता है। **श्रीप्रसाद,** वाराणसी, उ.प्र.

☐ अपने सहपाठी के यहां **सा. सं.** पढ़ा। साक्षरता की दिशा में अच्छा और सफल प्रयोग है यह। **निर्मल आचार्य,** नई दिल्ली

☐ शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में ने.बु. ट्रस्ट निस्संदेह उत्तम कार्य में संलग्न है। **अवधकिशोर श्रीवास्तव 'अवधेश',** झांसी, उ.प्र.

☐ **गहन तिमिर जब बढ़ गया / घबराया यह लोक**
हर प्राणी भय में घिरा / सका न कोई रोक
तब आकर 'संवाद' ने / फैलाया आलोक
अक्षर देकर मनुज को / किया जाग्रत लोक।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। **–संपा.**

किताबें

आनंद बिल्थरे

किताबें
चाबियां हैं
अनसुलझे रहस्य
खोलती हैं
किताबें, पाखियां हैं
आकाश में पर
तोलती हैं
इस तिलिस्म में
एक बार उतरकर
तो देखिए
किताबें वादियां हैं
मौन में भी
बोलती हैं।

बालाघाट, म.प.

भाती हैं किताबें

प्रो. शरद नारायण खरे

गीत खुशी के गाती हैं
किताबें
सुख भरे दिन
लाती हैं किताबें
किताबों से सुधरता है
जीवन 'शरद'
इसीलिए मुझको
भाती हैं किताबें।

मंडला, म.प्र.

गांव-गांव में चल रहा साक्षरता अभियान

निर्मल आचार्य

गांव-गांव में चल रहा, साक्षरता अभियान
पढ़-लिखकर साक्षर बनें, होगा देश महान
होगा देश महान, बहे शिक्षा की धारा
शिक्षित हो सारा देश, यही संदेश हमारा
'निर्मल' को शीतल करें, कल्पतरु की छांव
शिक्षा के विस्तार से, योग्य बनेंगे गांव।

मथुरा, नई दिल्ली

किताबें

सुरेश कुमार शर्मा, *ने.बु.ट्र.*

जानकारी की भूख
मिटाती हैं किताबें
कुतुहल की प्यास
बुझाती हैं किताबें
अपने बलबूते
खड़े हो सकें
हमें इस काबिल
बनाती है किताबें।

सबको साक्षर
बना देती है किताब
सब पर अपना प्यार
लुटा देती है किताब।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, *गोरखपुर, उ.प्र.*

पुस्तक को गले लगाना है

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

पुस्तक को
गले लगाना है
साक्षर हमें
बन जाना है।

अक्षर-अक्षर
ज्ञान कराए
पावन गंगा
यही बहाए।
इस जल में
नित नहाना है
पुस्तक को
गले लगाना है।

साक्षर अपनी
पैठ बनाता
जीवन में न
धोखा खाता।
ऐसा हमें
बतलाना है
पुस्तक को
गले लगाना है।

हम तो अब
सब पढ़ेंगे
जीवन-पथ पर
आगे बढ़ेंगे।
गीत हमें यह
नित गाना है
पुस्तक को
गले लगाना है।

सिहाल (कांगड़ा), हि.प्र.

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/04/2012

लघु कथा

उत्तम विद्या वही जो समय पर काम आए

बात बहुत पुरानी है। एक बार एक ब्राह्मण नदी किनारे पहुंचा। उसे नदी पार करनी थी। नाव घाट पर नहीं थी, इसलिए उस ब्राह्मण को वहां नदी के घाट पर इंतजार करना पड़ा। नाव आई, तो ब्राह्मण उसमें सवार हो गया। नाव यात्रियों को लेकर चल पड़ी।

उस ब्राह्मण ने काफी विद्या प्राप्त की थी, इसलिए उसे अपनी विद्या पर घमंड हो गया था। नाव कुछ दूर नदी में पहुंची तो ब्राह्मण ने नाविक से पूछा–"क्यों, कुछ पढ़ना-लिखना जानते हो?"

"नहीं महाराज।" मल्लाह बोला।

"तब तो तुम्हारा आधा जीवन बेकार हो गया।" ब्राह्मण ने घमंड से कहा।

"वह कैसे महाराज?" नाविक ने आश्चर्य से पूछा।

"जानते नहीं, जो विद्याध्ययन नहीं करते, उनका आधा जीवन बेकार हो जाता है।" अपनी विद्वता दर्शाते हुए ब्राह्मण बोले।

इस तरह दोनों में बातें हो रही थीं। इस बीच नाव नदी के बीच जा पहुंची। नाव मंझधार में ही थी कि सहसा जोरों का तूफान आ गया और नाव बुरी तरह डगमगाने लगी। मल्लाह जी-तोड़ कोशिशें करने लगा नाव संभालने की, किंतु स्थिति काबू से बाहर होती जाती।

मल्लाह ने ब्राह्मण से पूछा–"महाराज, क्या आप तैरना जानते हैं?"

"नहीं, मुझे तो तैरना नहीं आता।" ब्राह्मण का उत्तर था।

"क्या आप नाव चलाना जानते हैं?" मल्लाह ने अगला प्रश्न किया।

"नहीं भाई, मुझे तो यह भी नहीं आता।" ब्राह्मण ने कहा।

इस पर मल्लाह ने उनसे कहा–"तब तो महाराज आपका पूरा जीवन ही बेकार हो गया।"

"वह कैसे?" ब्राह्मण ने डरते हुए पूछा।

"आप तैरना नहीं जानते, इसलिए आपका पूरा जीवन बेकार हो गया, क्योंकि यह नाव मंझधार के बीच तूफान में फंस गई है और कभी भी डूब सकती है।" मल्लाह ने रहस्योद्घाटन किया।

तभी नाव सचमुच उलट गई। मल्लाह तो तैरकर किनारे जा पहुंचा, ब्राह्मण जान बचाने के लिए हाथ-पांव मारने व चिल्लाने लगा। फिर मल्लाह ने ही नदी में कूदकर उन्हें बचाया। बाहर आने पर ब्राह्मण की जान-में-जान आई। उसने मल्लाह को धन्यवाद दिया और कहा, "भाई, तुम सही हो। विद्या वही उत्तम है, जो समय पर काम आए।"

उसके बाद ब्राह्मण ने कभी अपनी विद्या का घमंड नहीं किया।

सुरेंद्र श्रीवास्तव, *लखनऊ, उत्तर प्रदेश*

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 119, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070